अमेरिकी प्रशिक्षकों ने दिए बेसबॉल के गुर

गिरिराज अग्रवाल

अमेरिका का राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक पसंदीदा खेल बेसबॉल क्या क्रिकेट के दीवाने भारतीयों के बीच लोकप्रिय हो सकता है? अमेरिकी मेजर लीग बेसबॉल प्रशिक्षकों द्वारा भारत में विभिन्न स्थानों पर संचालित बेसबॉल प्रशिक्षण शिविरों में आए सैकड़ों विद्यार्थियों, शौकिया खिलाड़ियों और स्थानीय प्रशिक्षकों के उत्साह को पैमाना माना जाए तो गेंद और बल्ले का यह खेल भारत में अपनी जड़ें जमा सकता है।

नई दिल्ली में दिलशाद गार्डन स्थित गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सैकेंडरी स्कूल की नौवीं कक्षा की छात्रा सरिता रानी कहती है, ''मैंने गेंद को पकड़ने के नए तरीके सीखे हैं। मैंने यह भी सीखा है कि कैसे गेंद को सही दिशा में तेज़ी से फेंका जाए।'' उसने अपने स्कूल में ही पढ़ाई के साथ-साथ बेसबॉल खेलना सीखना शुरू किया और नवंबर में अमेरिकी प्रशिक्षक जेफ़री ब्रगएमैन और डेविड पैलेसे द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविर में हिस्सा लिया।

ये दोनों प्रशिक्षक उन 700 हाई स्कूल, कॉलेज और पेशेवर प्रशिक्षकों में शामिल हैं जिन्हें न्यू यॉर्क की मेजर लीग बेसबॉल इंटरनेशनल ने बेसबॉल का खेल शुरू करने और उसे बढ़ावा देने के लिए 72 देशों में भेजा है। संस्था के उपाध्यक्ष पॉल आर्शी कहते हैं कि इसका उद्देश्य बेसबॉल का अंतर्राष्ट्रीयकरण करना है। फ़र्स्ट पिच नामक संगठन, न्यू यॉर्क और मणिपुर आधारित अमेरिका-मणिपुर बेसबॉल परियोजना है। इसके साथ काम करते हुए मेजर लीग बेसबॉल इंटरनेशनल ने भारत में अमेरिकी दूतावास और कान्सुलेट के साथ समन्वय कर प्रशिक्षकों को इम्फाल, चेन्नई, कोलकाता, मुंबई, चंडीगढ़, गोवा और हैदराबाद भेजा।

अमेरिकी प्रशिक्षकों ने युवा खिलाड़ियों को बताया कि गेंद हमेशा दोनों हाथों से पकड़नी चाहिए। यदि गेंद नाभि के ऊपर की ओर हो तो गेंद को पकड़ते समय हाथ ऊपर की दिशा में होने चाहिए अन्यथा हाथ नीचे की दिशा में होने चाहिए।

ब्रगएमैन और पैलसे ने युवा खिलाड़ियों को सिखाया कि कैसे कंधे, हाथों और पैरों की दिशा में तालमेल बिठाया जाए कि गेंद को सही दिशा में सर्वाधिक ताकत से फेंका जा सके। बेहतर तरीके से गेंद को पिच कराने और हिट करने के तरीकों के बारे में शुरुआती जानकारी भी दी गई। ब्रगएमैन मिनेसोटा ट्विन्स के लिए छह साल तक पिचर थे और चीन की नेशनल जूनियर टीम के भी प्रशिक्षक रहे। पैलसे न्यू यॉर्क स्थित रॉशेस्टर यूनिवर्सिटी में सहायक बेसबॉल प्रशिक्षक हैं।

अमेरिकी प्रशिक्षकों का पहला पड़ाव मणिपुर था जहां बेसबॉल दशकों से खेली जा रही है। इम्फाल में 25 क्लबों में यह खेल खेला जाता है।

फ़र्स्ट पिच की शुरुआत वर्ष 2005 में मणिपुर में बेसबॉल के स्तर, खेल सामग्री की क्वालिटी और बेहतर खेल मैदानों को बढ़ावा देने के लिए की गई। फ़र्स्ट पिच की मुखिया मुरियल पीटर्स कहती हैं, ''ये लोग खेल का आनंद उठाते हैं और इनमें एथलीट वाले गुण जबर्दस्त हैं। इसी उत्साह के कारण हमें भारत के इस दूरदराज के कोने में फ़र्स्ट पिच की स्थापना की प्रेरणा मिली।''

नई दिल्ली में राजदूत डेविड सी. मल्फ़र्ड द्वारा शुरुआती औपचारिक पिच फेंके जाने के साथ ब्लू बर्ड्स और रेड एंजेल्स नामक दो शौकिया टीमों के बीच प्रदर्शन मैच हुआ। इस मौके पर उन्होंने कहा, ''बेसबॉल अमेरिका के लिए उसी तरह से है जैसे कि भारत के लिए क्रिकेट। हम इस बात से खुश हैं कि हम इस खेल में भारत के साथ भागीदारी कर सकते हैं। खेलों के प्रति उत्साही भारतीय एक दिन बेसबॉल को भी उसी तरह अपना सकते हैं जैसे कि उन्होंने क्रिकेट और अन्य खेलों को अपनाया है।'' इस मौके पर डिप्टी चीफ़ ऑफ़ मिशन जेफ़री पायट ने खिलाड़ियों को गेंद और दस्ताने उपहार में दिए जिन्हें मेसाच्यूसेट्स स्थित खेल सामग्री निर्माता स्पाल्डिंग ने दान में दिया था।

दिल्ली सरकार के शिक्षा निदेशालय के मुख्य बेसबॉल प्रशिक्षक अनूप कुमार कहते हैं, ''इन बेसबॉल प्रशिक्षण शिविरों को नियमित रूप से आयोजित करने की ज़रूरत है। हमें पता चला कि हम गलत नियमों के साथ खेल रहे थे।'' वह कहते हैं, ''भारत में बेसबॉल तब तक लोकप्रिय नहीं हो सकता जब तक कि हम बच्चों को यह आश्वस्त नहीं कर देते कि वे इस खेल को खेलकर किसी रूप में आगे बढ़ सकते हैं। हमें ज़्यादा प्रतियोगिताओं और खिलाड़ियों को सम्मान देने की जरूरत है।''

दिल्ली के द्वारका इलाके में इंद्रप्रस्थ इंटरनेशनल स्कूल में खेल अध्यापिका किरण डबास भी इस बात को स्वीकार करती हैं। वह कहती हैं कि अमेरिकी प्रशिक्षकों ने नए नियम समझाए और थ्रोइंग, कैचिंग, पिचिंग और हिटिंग के बेहतर तरीके सुझाए। लेकिन वह कहती हैं, ''भारत में बेसबॉल की लोकप्रियता में वही कारण बाधक हैं जिनसे अन्य खेलों को जूझना पड़ रहा है, सुविधाओं की कमी और मामूली सहायता।'' सुश्री डबास कहती हैं, ''खेल के मैदान नहीं हैं। सस्ते से सस्ते दस्ताने, गेंद और बल्ले पर कई हज़ार रुपये का खर्च आता है। भारत में कई बेसबॉल खिलाड़ी इतना खर्च बर्दाश्त नहीं कर सकते।''

भारत में अपने अनुभवों का निचोड़ बताते हुए अमेरिकी प्रशिक्षक ब्रगएमैन कहते हैं कि यही सही है कि मूल सुविधाओं की जरूरत है। इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चों को हेलमेट और अच्छी पैडिंग वाले दस्ताने मुहैया कराए जाएं जिससे कि उन्हें चोट न लगे। लेकिन वह आशावान हैं कि भारत में बेसबॉल अपनी जड़ें जमा सकता है। ''भारत एक अरब से ज़्यादा लोगों का देश है। आप लोग इतने ज़्यादा खेल नहीं खेलते। ऐसे परिदृश्य में बेसबॉल अच्छा विकल्प है। बेसबॉल के बारे में अच्छी बात यह है कि इसे किसी भी आकार और कद-काठी का व्यक्ति खेल सकता है।'' उनके अनुसार बल्ले और गेंद के खेल 'क्रिकेट' के प्रति पहले से दीवाने लोग बेसबॉल को भी संभवत: दिलचस्प पाएंगे।

प्रशिक्षक जेफ़री ब्रगएमैन (ऊपर दाएं) और डेविड पैलसे (नीचे) अमेरिकी दूतावास के बेसबॉल मैदान पर ब्ल्यू बर्ड्स और रेड एंजेल्स टीमों के खिलाड़ियों को बेसबॉल के गुर सिखाते हुए। ब्ल्यू बर्ड्स के राजेंद्र नेगी (ऊपर बाएं) गेंद पिच कराने की तैयारी में।

फोटो: विकास नगला